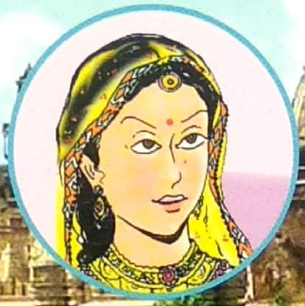
गाथा

गोरा-बादल

की







ब्रजराज राजावत

Scanned by CamScanner

गाथा गोरा-बादल की

लेखन व चित्रांकन :
ब्रजराज राजावत

प्रकाशक :
विश्व संवाद केन्द्र
मधुकर भवन, बी-19, न्यू कॉलोनी, जपुर
दूरभाष : 0141-2366926
E-mail : jprvsk@gmail.com

द्वितीय संस्करण - 2018

प्रकाशन तिथि - राधाष्टमी, संवत् 2075

सर्वाधिकार सुरक्षित

सहयोग राशि - ₹ 40.00

Scanned by CamScanner

प्रस्तावना

मेवाड़ का नाम स्वाभिमान, त्याग, बलिदान एवं शौर्य के लिए न केवल राजस्थान अपितु सम्पूर्ण भारत में बड़े गर्व से लिया जाता है। यहाँ महाराणा प्रताप जैसे शूरवीरों, रानी पद्मिनी जैसी वीरांगनाओं एवं गोरा-बादल जैसे त्यागी पुरुषों ने जन्म लिया।

1303 ई. में मुस्लिम आक्रांता दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने मेवाड़ की हृदयस्थली चित्तौड़ पर आक्रमण किया। इस समय महाराव रतनसिंह की जीवनसंगिनी रानी पद्मिनी ने बड़े साहस का परिचय देते हुए न केवल मेवाड़ी सेनानायकों को मार्गदर्शित किया अपितु अपने सतीत्व की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग किया। वीर गोरा एवं बादल ने अलाउद्दीन की सेना के विरुद्ध मेवाड़ी सैनिकों का नेतृत्व कर अपनी अंतिम सांस तक मेवाड़ की स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए दृढ़ता से युद्ध किया।

इतिहास का गंभीर अध्ययन प्रत्येक के लिए सम्भव नहीं है। चित्रकथा सभी के लिए सदैव रोचक रही है। गोरा-बादल के जीवन पर चित्रकथा प्रकाशित करने का उद्देश्य न केवल बढ़े अपितु छोटे बालक भी अपने भारत के गौरवशाली इतिहास के बारे में कहानियों एवं चित्रों के माध्यम से, छोटे-छोटे संवादों को सहज रूप से जानकर अपने अतीत पर गर्व करते हुए भविष्य का श्रेष्ठ संकल्प ले सकें।

लेखक ब्रजराज राजावत ने अपनी कृति **'गाथा गोरा-बादल की'** के माध्यम से रानी पद्मिनी की वीरता एवं गोरा-बादल की वीरोचित प्रेरणा को चित्रांकित करने का सराहनीय प्रयास किया है। विश्व संवाद केन्द्र ने इसका प्रकाशन कर वीरों के अनुकरणीय कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने का अच्छा प्रयास किया है।

डॉ. शिव कुमार मिश्रा
प्राध्यापक इतिहास, कोटा

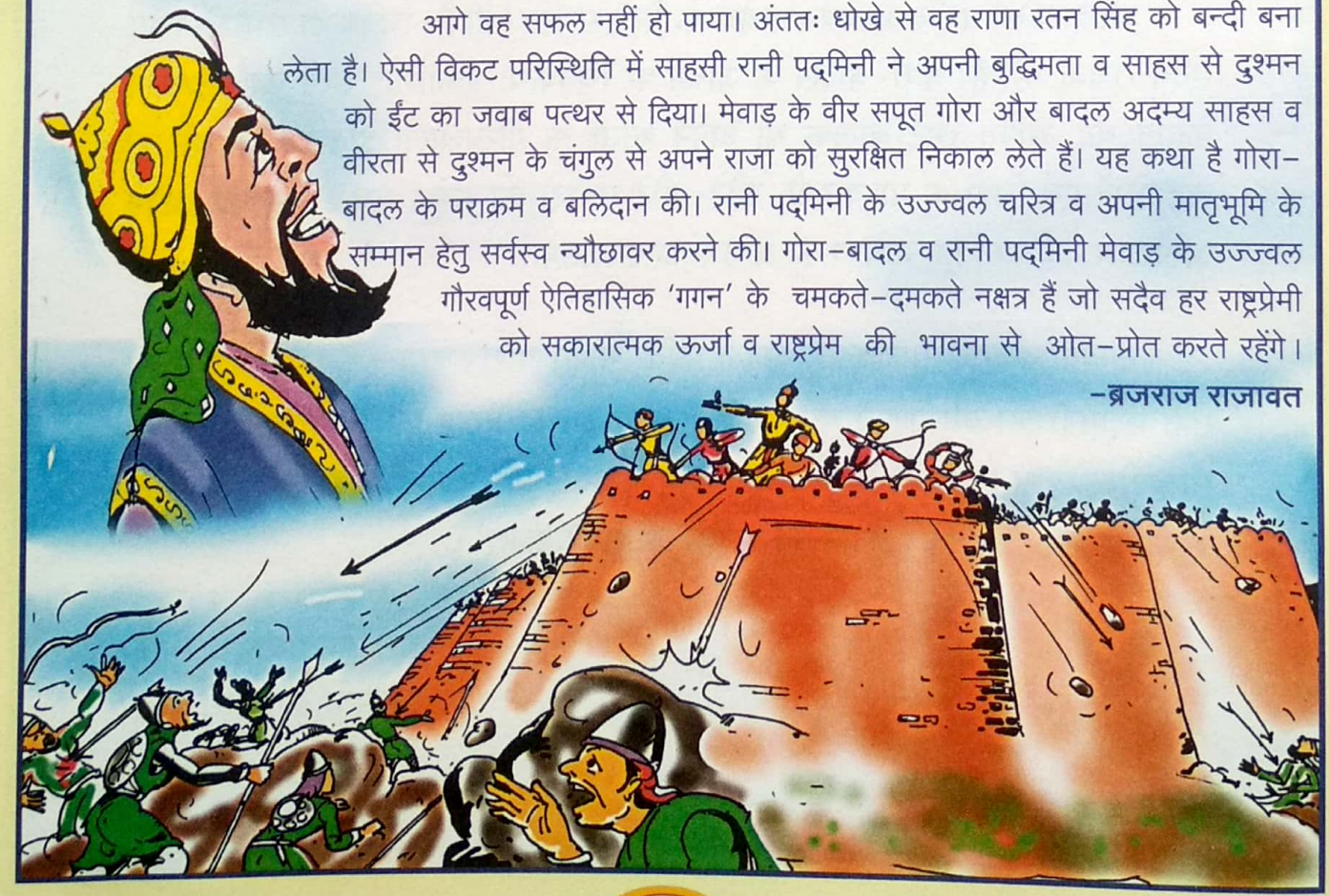
Scanned by CamScanner



गाथा
गोरा-बादल की

देशी-विदेशी इतिहासकार भारत के अतीत के पृष्ठों का साक्षात्कार कर सदैव विस्मित होते रहे हैं। क्या नहीं है इस देश के इतिहास में। अध्यात्म, ज्ञान-विज्ञान व भक्ति ने जहां चरम को छुआ है, वहीं शौर्य, वीरता व समर्पण की पराकाष्ठा भी यहां देखने को मिलती है। प्रस्तुत चित्रकथा भी कुछ ऐसे ही भावों से गुंथी इस पावन भूमि के राजपूताने (वर्तमान नाम राजस्थान) के मेवाड़ में घटित एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। पश्चिमी एशिया से उठी इस्लाम नाम की आंधी अल्लाउद्दीन खिलजी जैसे आक्रमणकारी के रूप में भारत की हिन्दू संस्कृति को तहस नहस करने आ पहुँची। कई रियासतों का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगा। इस आतताई का रुख उस काल के समृद्ध राज्य मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ की ओर हुआ। धर्मान्ध-कामान्ध 'खिलजी' मेवाड़ को जीतने के साथ ही रूपवती रानी पद्मिनी को हर कीमत पर पाना चाहता था, किन्तु मेवाड़ी वीरों व अजेय चित्तौड़ दुर्ग के आगे वह सफल नहीं हो पाया। अंततः धोखे से वह राणा रतन सिंह को बन्दी बना लेता है। ऐसी विकट परिस्थिति में साहसी रानी पद्मिनी ने अपनी बुद्धिमता व साहस से दुश्मन को ईंट का जवाब पत्थर से दिया। मेवाड़ के वीर सपूत गोरा और बादल अदम्य साहस व वीरता से दुश्मन के चंगुल से अपने राजा को सुरक्षित निकाल लेते हैं। यह कथा है गोरा-बादल के पराक्रम व बलिदान की। रानी पद्मिनी के उज्ज्वल चरित्र व अपनी मातृभूमि के सम्मान हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने की। गोरा-बादल व रानी पद्मिनी मेवाड़ के उज्ज्वल गौरवपूर्ण ऐतिहासिक 'गगन' के चमकते-दमकते नक्षत्र हैं जो सदैव हर राष्ट्रप्रेमी को सकारात्मक ऊर्जा व राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत-प्रोत करते रहेंगे।

-ब्रजराज राजावत



Scanned by CamScanner

शौर्य एवं बलिदान की ऐतिहासिक घटना पर आधारित चित्रकथा

देश के गौरव
गोरा और बादल



आलेख व चित्रांकन
ब्रजराज राजावत

वह समय था जब विदेशी आक्रांता अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का सुल्तान था अपने सैन्य बल, कुटिल चालों व यहां की राजाओं के आपसी मतभेदों के कारण भारत के बड़े भू भाग पर अपना अधिकार जमा चुका था। ... राजपूताने में भी इस धर्म-ध्वंसक, विषय लोलुप, निर्दयी सुल्तान की काली छाया पड़ चुकी थी..

??

रणथम्भौर विजय की मुझे जो खुशी मिली है वो मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता

सुल्तान ने हिंदुस्तान में और भी खास सूबे जीते हैं ... फिर भी ?.

तुम भूल गये यह जीत राजपुताने में मिली है ... अपने धर्म व संस्कृति पर मर मिटने वाली कौम के अभिमान को मैं सदैव के लिए कब्र में दफन कर देना चाहता हूं..

अपने राज्य की हदें हिंदुस्तान के आखिरी छोर तक पहुंचाने के साथ साथ इस्लाम का प्रसार करना हमारा मकसद है .. और इसके लिए राजपूताने की रियासतों को पराजित कर राजपूतों के हौसलों को भी जड़ से मिटाना होगा.

हुजूर के लिए यह कोई नामुमकिन बात तो नहीं

Scanned by CamScanner

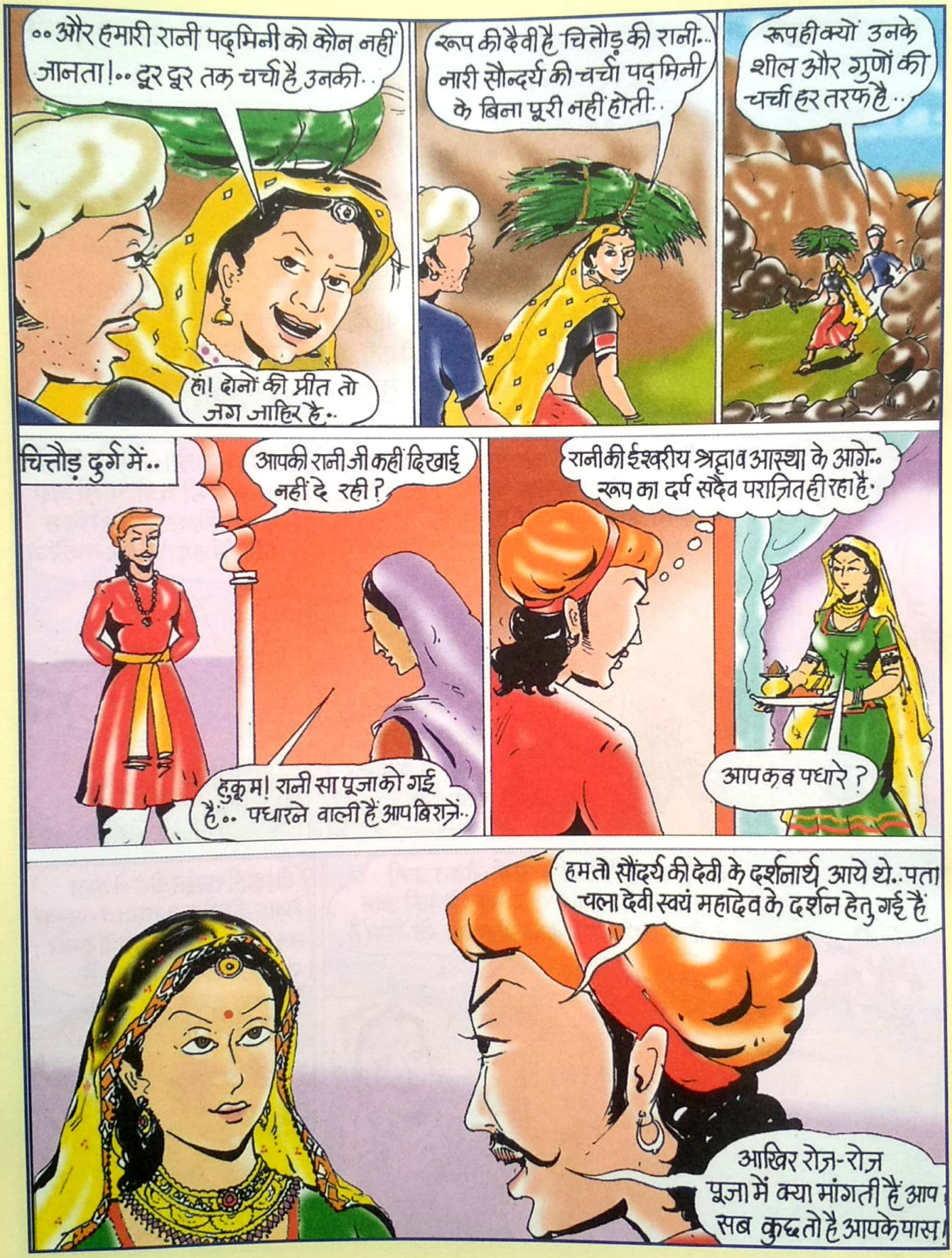


Scanned by CamScanner

अलाउद्दीन जहां चित्तौड़ पर नजरें गड़ाये था.. वहीं पूरे मेवाड़ में लोग अपने न्यायप्रिय व धर्मानुरागी राजा रतन सिंह के शासन में खुशहाल जीवन जी रहे थे।



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

मेवाड़ पर तो गर्व हम सब को है.. किंतु आपके विचार सुनकर संतोष सा होता है..

संतोष!! वो कैसे?

वो इसलिए कि भविष्य में कभी संकट की घड़ी आभी जाए तो आप मेवाड़ की रक्षार्थ पीछे नहीं रहेंगी

पद्मिनी तो आपकी छाया है.. फिर वो पीछे कैसे रह सकती है!

मेवाड़ में शांति और समृद्धि का समय था... उसी समय एक अतिमहत्वाकांक्षी तांत्रिक- 'राघव चेतन' का दरबार में प्रवेश होता है.. रतन सिंह उससे बहुत प्रभावित होते हैं

पधारिए!.. आपकी साधना कैसी चल रही है?.. कोई सिद्धि प्राप्त हुई?

जहाँ साधना है वहाँ सिद्धि प्राप्ति में शंका कैसी! .. सिद्धियां मेरी मुट्ठी में है राजन्!

और कुछ ज्ञानार्जन भी होता है आपकी तंत्र साधना से..?

जहां सिद्धि है वहां आपका ज्ञान स्वतः खिंचा चला आता है राजगुरु!

Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

हुजूर! कोई चित्तौड़ से आया है.. आप से मिलना चाहता है.. कल दरबार..में..?

चित्तौड़ से आया है तो कल नहीं अभी बुलाओ ..

दिल्ली के सुल्तान का सितारा हमेशा बुलंद रहे

ओह!.. हम तो समझे थे कोई सामंत चित्तौड़ से बगावत करके आया है ...

फकीर, तुमने आकर हमारे हसीन लम्हों में नाहक खलल डाला है!

हसीन लम्हें ??... बिना हसीनाओं के कैसे हसीन लम्हें सुल्तान ?

हमारे पासबगल में क्या हसीनाओं का साया मौजूद है ?

Scanned by CamScanner

क्षमा करें सुल्तान, यदि यह आपके लिए हसीन है तो उसे क्या कहेंगे आप?

तुम जो भी हो.. व्यक्ति दिलचस्प लगते हो! किसके बारे में कह रहे हो खुलकर कहो

एकान्त ऽऽ

मेरा नाम राघव चेतन है हुजूर! जिसके बारे में कह रहा हूं वह है.. चित्तौड़ की रानी पद्मिनी

चित्तौड़ की रानी?

हां रतन सिंह की पत्नी पद्मिनी.. हिन्दुस्तान में ऐसा रूप कहीं नहीं है.. यौवन व सौंदर्य का बेमिसाल संगम है वो..

लेकिन अफसोस! जिस हुस्न के चिराग से आपका हरम रोशन होना चाहिए.. आज चित्तौड़ में रतन सिंह की रातें रंगीन कर रहा है.

आह!.. तुमने अपनी बातों से हमें बैचेन तो कर दिया..

किंतु तुम्हारी चित्तौड़ के राजा से कैसी नाराजगी है?... लगते तो ज्ञानी फकीर से हो... फिर अपने ही राजा से इतनी नफरत क्यों?

Scanned by CamScanner

हां नफरत करता हूं मैं रतन सिंह से अपमान किया है उसने मेरा...

यह सत्य है कि मैं चित्तौड़ की बर्बादी चाहता हूं किंतु उससे भी बड़ा सच यह है कि पद्मिनी की सुंदरता अद्वितीय है... बेजोड़ है.

पद्मिनी !!! तुम्हें रतन सिंह के पास नहीं हमारे पास होना चाहिए... तुम्हें आना ही होगा.. पद्मिनी..

चित्तौड़ तो हमारी नजर में कब का खटक रहा है.. पद्मिनी जैसा हीरा अब अधिक समय तक रतन सिंह के पास नहीं रह पाएगा..

वाह! अब मेरा कार्य पूरा हुआ...

जाओ! तुम्हारा प्रतिशोध और हमारी मनोकामना अवश्य पूरी होगी.. शीघ्र..

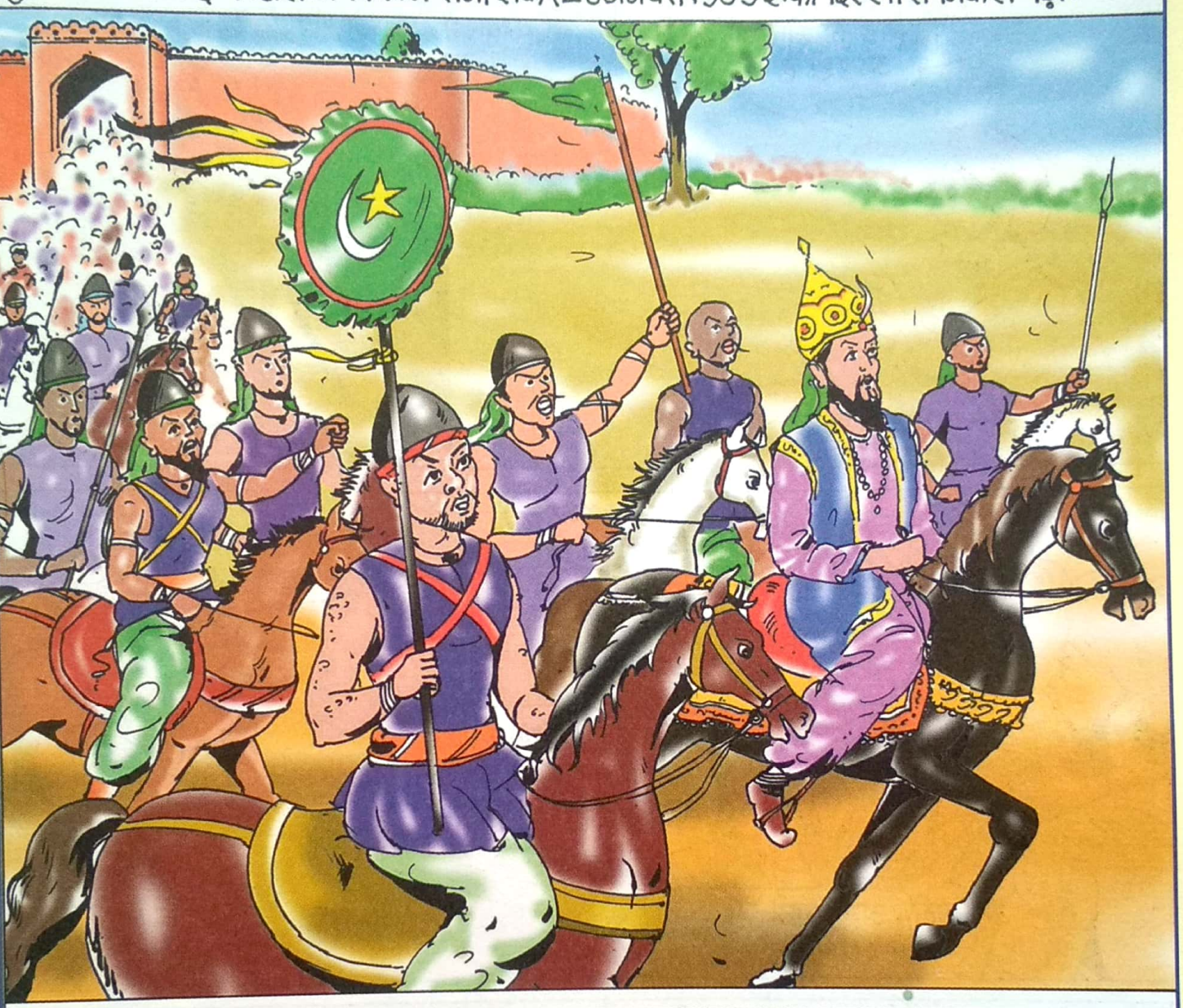
अलाउद्दीन पद्मिनी को पाने के लिए अधीर हो उठा..

सेनानायक! सेना तैयार करो..

हिन्दू कौम व तहजीब के केन्द्र चित्तौड़ दुर्ग को तहस नहस कर दूंगा मैं ऽऽ.. और बदले में पाऊंगा पद्मिनी

Scanned by CamScanner

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी विशाल सेना लेकर 28 जनवरी। 303 ई. को दिल्ली से निकल पड़ा...

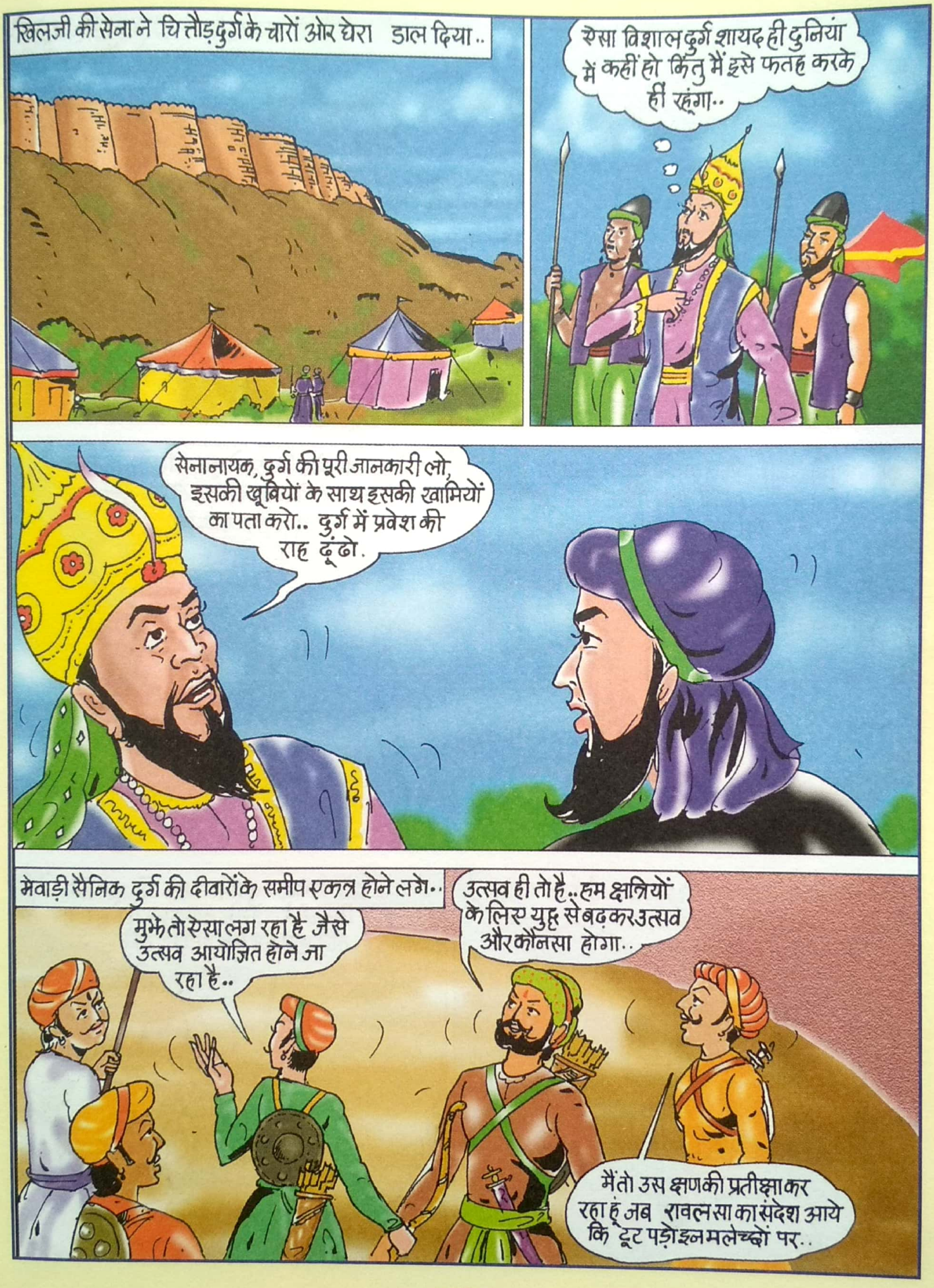




Scanned by CamScanner



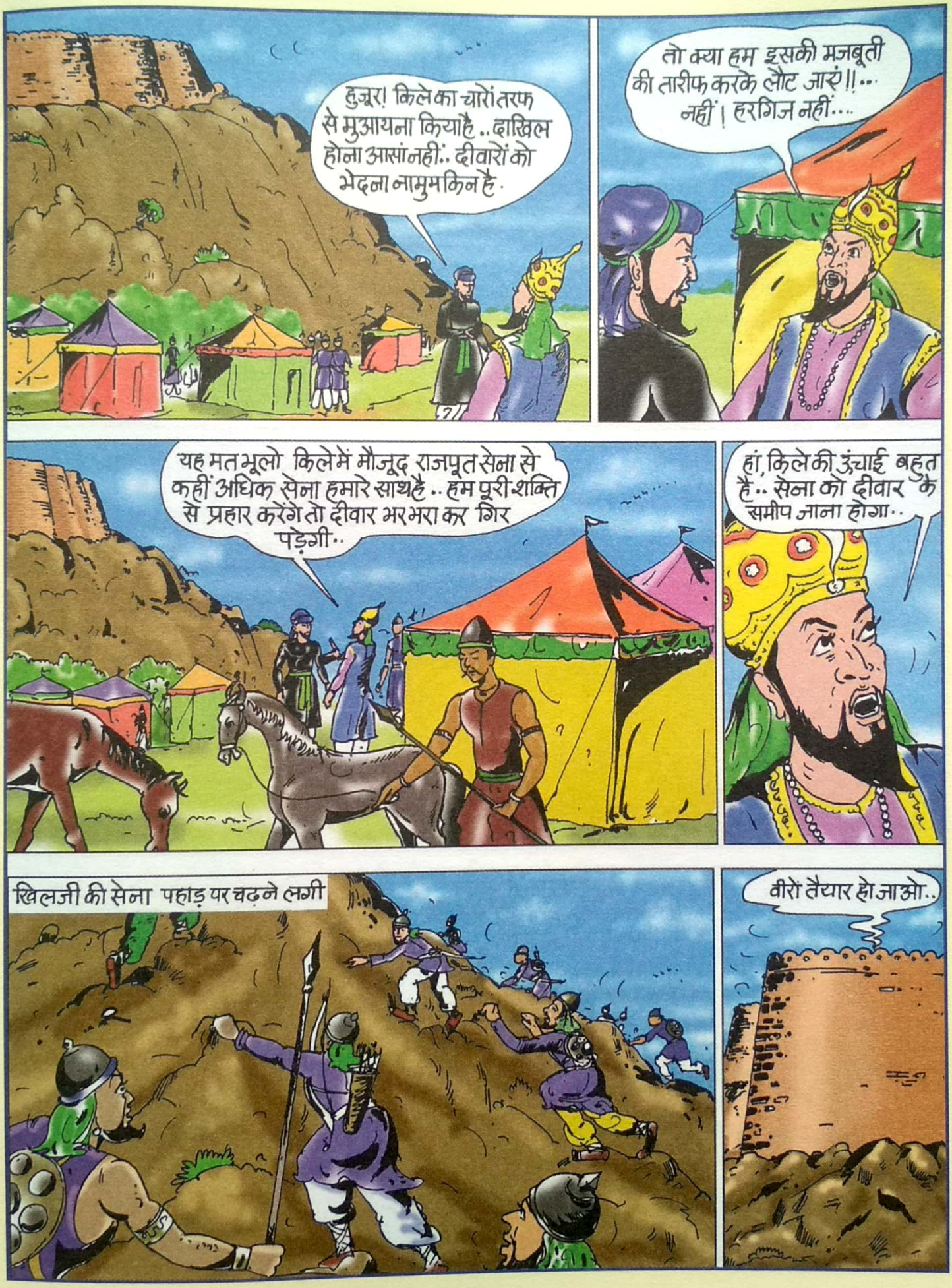
Scanned by CamScanner



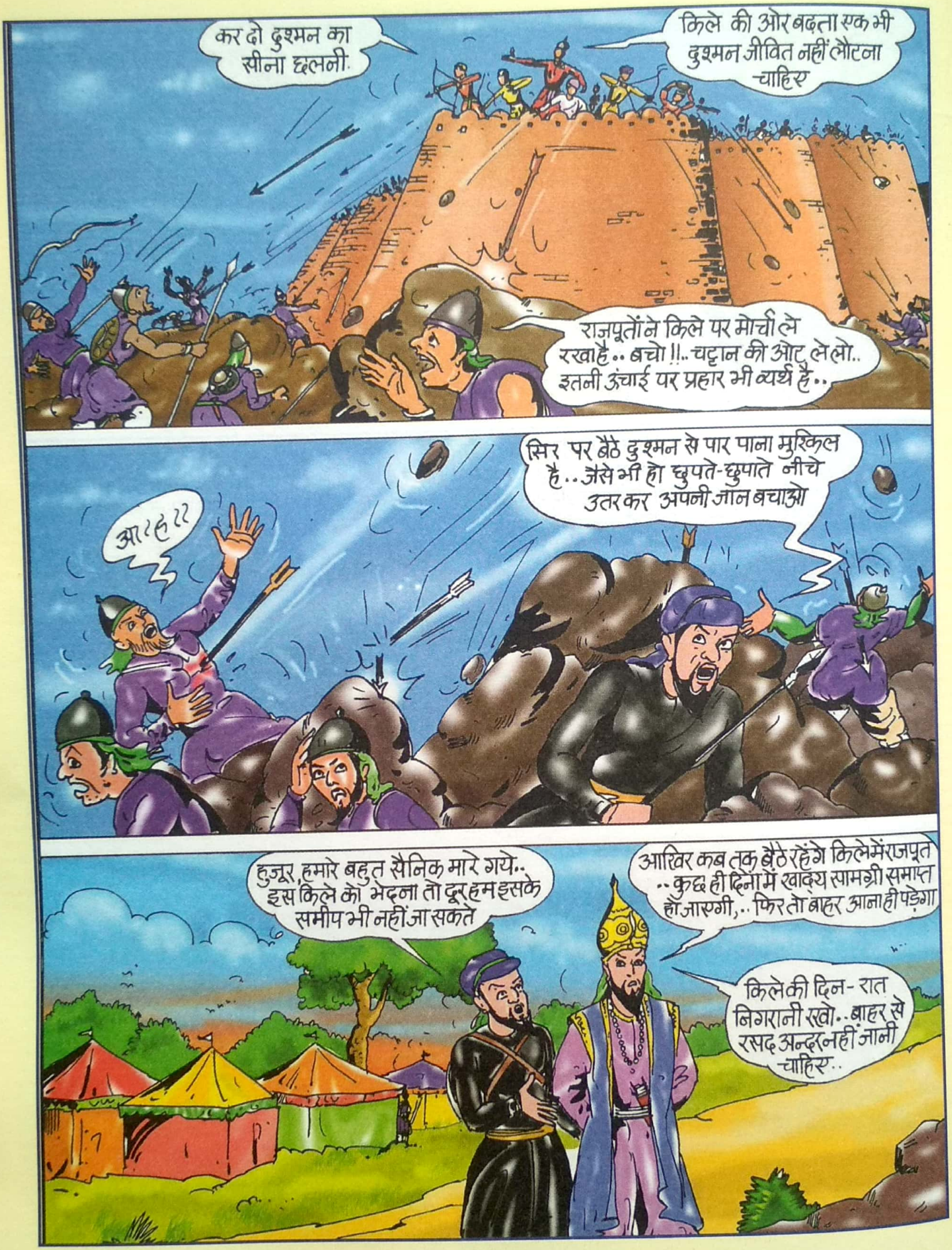
Scanned by CamScanner



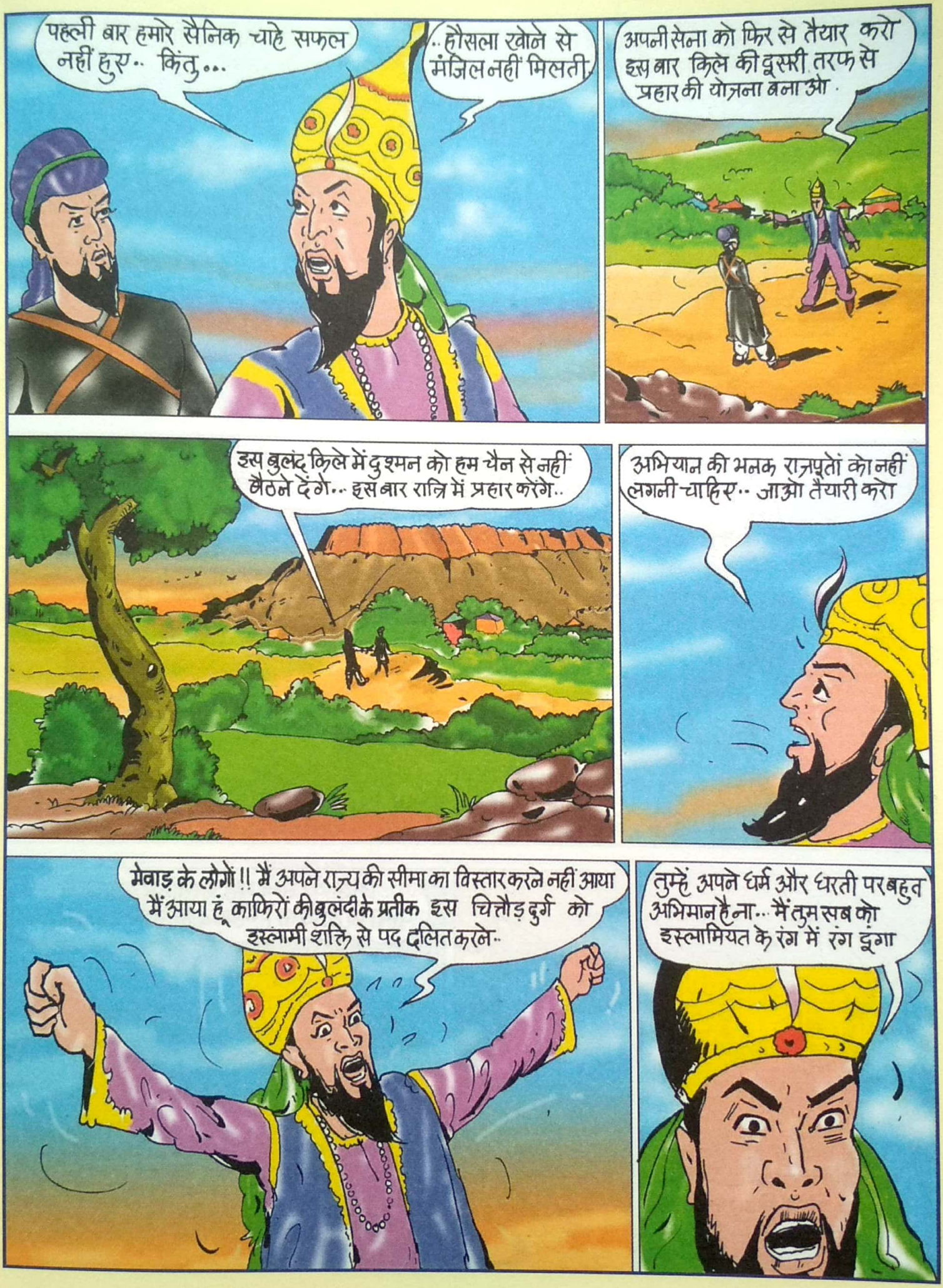
Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

अनाज का पर्याप्त भण्डारण है किले में.. चिंता की कोई आवश्यकता नहीं है।..हां हमारा सारा ध्यान दुश्मन की हर गतिविधि पर सूक्ष्मता से होना चाहिए..

इधर रात्रि में दुश्मन सेना...

सावधानी से, आहट नहीं!.. धीरे-धीरे आगे बढ़ो..

राजपूत अभी गहरी निद्रा में होंगे..तब तक हम बड़ी संख्या में किले की दीवारों पर ..चढ़ सकते हैं..

..हमारी तैयारी पुख्ता है, बस किले में भनक नहीं लगनी चाहिए

यह पहाड़ पर कैसी हलचल है अंधेरे में? कहीं..??

तुम्हारा संदेह उचित है। मुझे तो यह दुश्मन की सेना लग रही है ...शीघ्र सूचना दो राजा को.

किले में प्रवेश तो क्या इसके समीप आने का दुस्साहस करना, अपनी मौत को निमंत्रण देना है

मेरी सेना के सारे प्रयास व्यर्थ हैं... ..बड़ी संख्या में सैनिक मारे गये.. मगर हासिल कुछ नहीं हुआ

किले को भेदना सच में असंभव है..अब एक ही राह बची है, किले में रसद-खाद्य सामग्री खत्म होने का इंतजार

लम्बे अरसे तक अलाउद्दीन की सेना दुर्ग को घेरे रही, प्रयास करती रही पर न तो दुर्ग में प्रवेश कर पायी न ही भेद पायी..

Scanned by CamScanner

दुश्मनका दम्भ चित्तौड़ दुर्ग से टकरा-टकराकर पूरी तरह चूर चूर हो गया वह जान गया कि बल से न पद्मिनी मिलेगी न ही जीत..

सेनानायक! क्यों पहाड़ से टकरा कर सैनिकों की कुर्बानी देते रहें हम!.. लगता है पद्मिनी मेरे लिए स्वप्न ही रहेगी

हुजूर! अब कोई राह भी नहीं है

निराश न हों सुल्तान! एक राह है अभी

कौन? राघव चेतन! समीप आओ फकीर!

कुएं के इतने समीप आकर प्यासे लौटेंगे..?

कुएं से पानी नहीं निकाल सके तो उसमें कूद जाना मूर्खता है

जहां शक्ति से काम न चले वहां युक्ति काम कर जाती है

सुल्तान! राजपूत जितने साहसी व वीर होते हैं उतने ही निष्कपट व सरल भी.

सुल्तान, आप राजा रतन सिंह को संदेश भिजवाएं कि आप चित्तौड़ से अपनी सेना लेकर दिल्ली लौटने तैयार हैं.. किंतु..

किंतु क्या?

लौटने से पूर्व आप इस अजेय चित्तौड़ दुर्ग को देखना चाहते हैं

Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

किंतु वह जाने से पूर्व चित्तौड़ दुर्ग को अन्दर से देखना चाहता है।... यदि हम उसकी यह इच्छा पूर्ण करदें तो वह शीघ्र सेना लेकर चला जाएगा

दुश्मन पर कैसे विश्वास करें हम?

महाराज दुश्मन स्वीकार तो है कि वह नहीं जीत सकता तो स्वतः चला जाए ..यह इच्छा के बहाने शर्त क्यों

किंतु गोरा सरदार! इसी इच्छा को लेकर वह यहीं डटा रहा तो वह स्थिति भी हमारे लिए ठीक नहीं होगी

आप भी जानते हैं कि गढ़ में भी खाद्यसामग्री धीरे-धीरे समाप्त हो रही है

ऐसी स्थिति आने से पूर्व ही हम दुश्मन पर टूट पड़ेंगे.. आपके आदेश की आवश्यकता है।

अभी तो दुश्मन स्वयं पीछे हट रहा है तो उसकी मांग स्वीकारना उचित होगा.. यहां के निवासी भी दुश्मन सेना के आतंक से छुटकारा पायेंगे

आपका निर्णय ही हम सब का निर्णय है..

Scanned by CamScanner

वक्त की नज़ाकत समझ रावल रतन सिंह, अलाउद्दीन की दुर्ग देखने की मांग मान लेते हैं..

सुल्तान! साथ में आये सैनिक आगे नहीं आयेंगे।.. एक सेवक के साथ आगे आजाइए

तुम सब वापस लौट जाओ... मेवाड़ी सैनिक अब हमारे दुश्मन नहीं.. मैं चित्तौड़गढ़ को मित्रता के बंधन में बांधने जा रहा हूं...

गिरगिट भी इतना जल्दी रंग नहीं बदल पाता होगा..

आइये सुल्तान! किले में आपका स्वागत है..

रतन सिंह जी, इस किले को जीतने के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण मेरी नादानी साबित हुई है

यह दुर्ग अजय है... और शायद ही ऐसा बुलंद आलीशान दुर्ग दुनिया में कहीं होगा

ऐसे बेमिशाल दुर्ग के राजा के साथ मैं शत्रुता नहीं, मित्रता के सम्बंध चाहता हूं..

हमारे मन में भी आपके लिए ऐसे ही भाव हैं

जलपान के लिए अंदर आयें सुल्तान!

शायद पद्मिनी भी यहीं रहती हो!

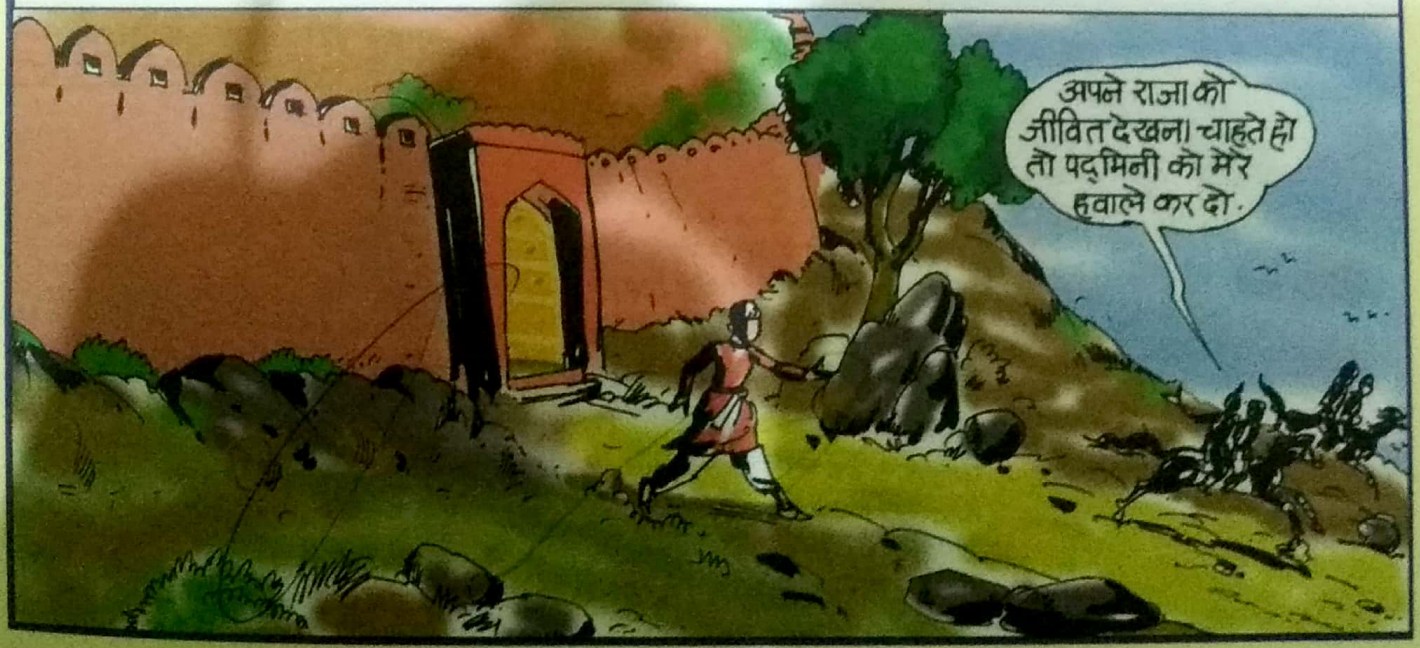
Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner







Scanned by CamScanner

किले में हड़कम्प मच गया

यह कैसा संकट आ गया चित्तौड़ पर!!

अब क्या होगा?

नाग पर विश्वास कर महाराज ने बड़ी भूल की..

केसरिया बाना पहन मलेच्छों पर टूट पड़ने की घड़ी आ पहुंची है

रानी जी! गजब हो गया! रावल जी को अलाउद्दीन धोखे से पकड़ कर ले गया...

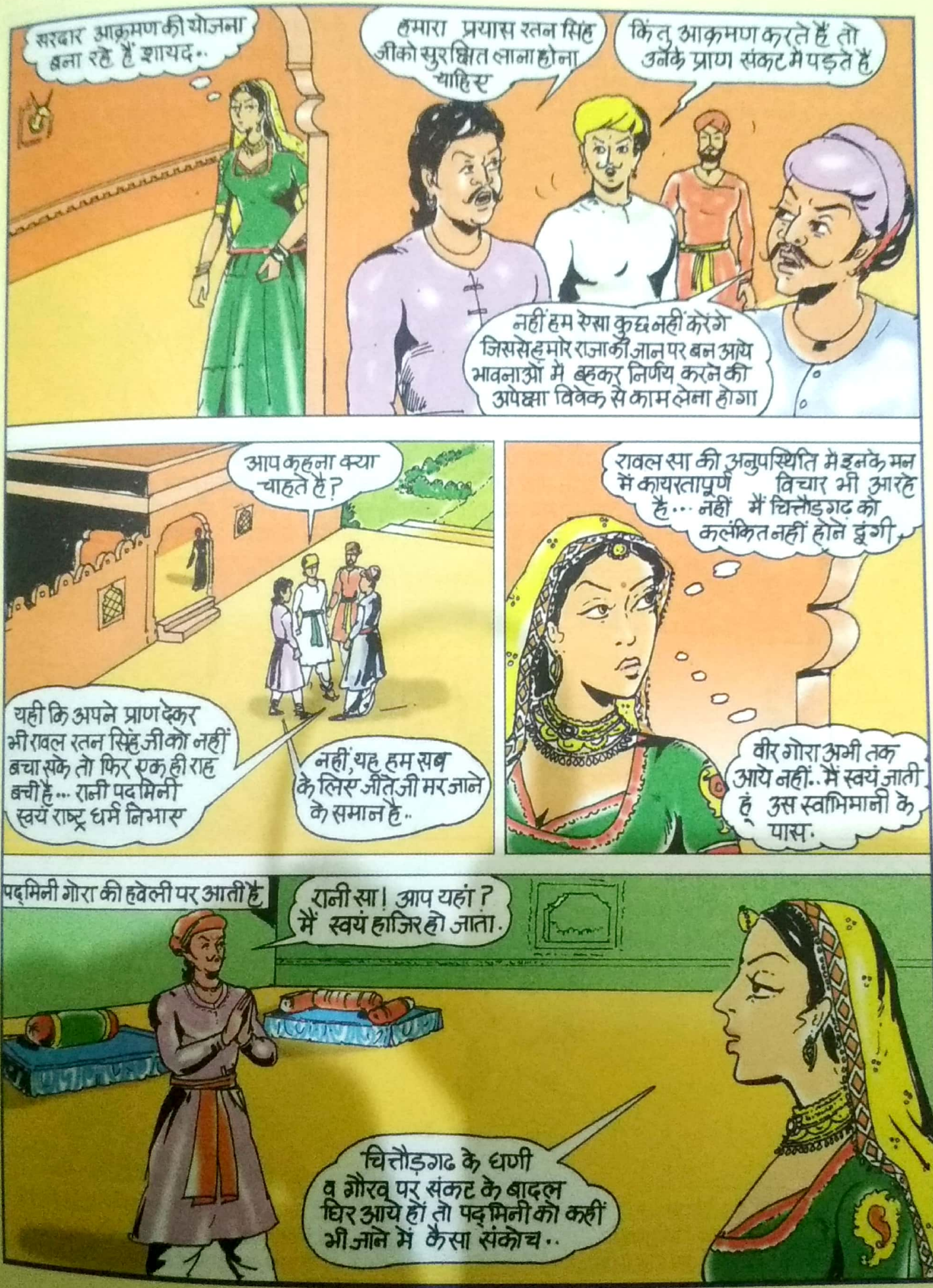
...और संदेश भेजा है कि आप को उसके पास नहीं भेजा तो वह रावल सा को जीवित नहीं छोड़ेगा

हे प्रभु! मेरी पूजा में कहां कमी रह गई! .. यह मेरा रूप ही पति व चित्तौड़ के लिए अभिशाप बन गया. मेरे सुहाग व मेवाड़ी स्वाभिमान की रक्षा करो..

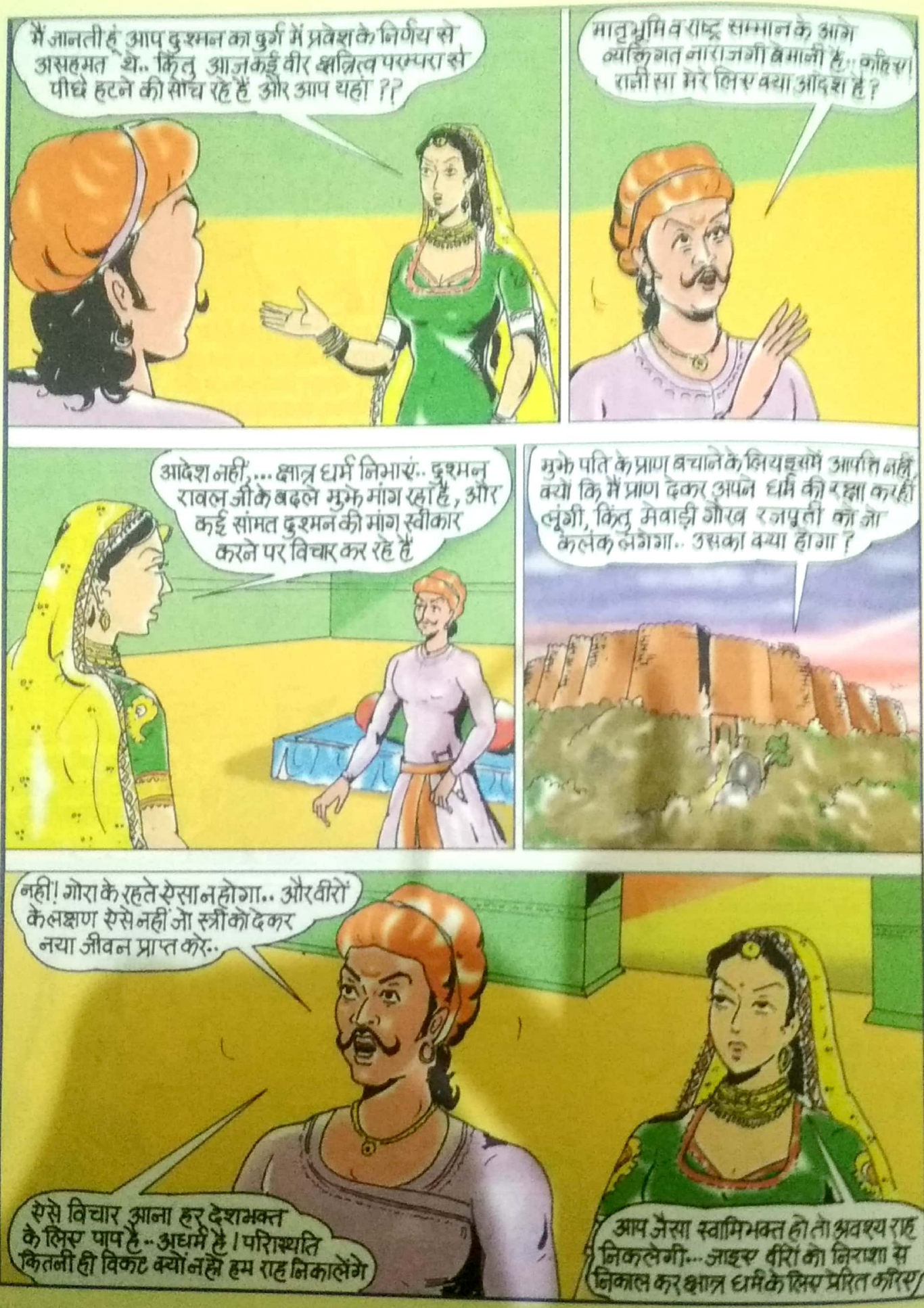
भारत भूमि की संस्कृति तो जीओ और जीने दो की रही है. उसी पर आज यह कैसी राक्षसी शक्तियों के हमले हो रहे हैं... इन पर विश्वास करना ही चित्तौड़ के लिए आफत हो गई... इन मलेच्छों पर अब इनकी ही भाषा व चरित्र के अनुसार ही रणनीति बनानी होगी. ...मुझे ही कुछ करना होगा..

सरदार गोरा के पास जाओ! कहना संकट की घड़ी में रानी पद्मिनी अभी मिलना चाहती है..

Scanned by CamScanner



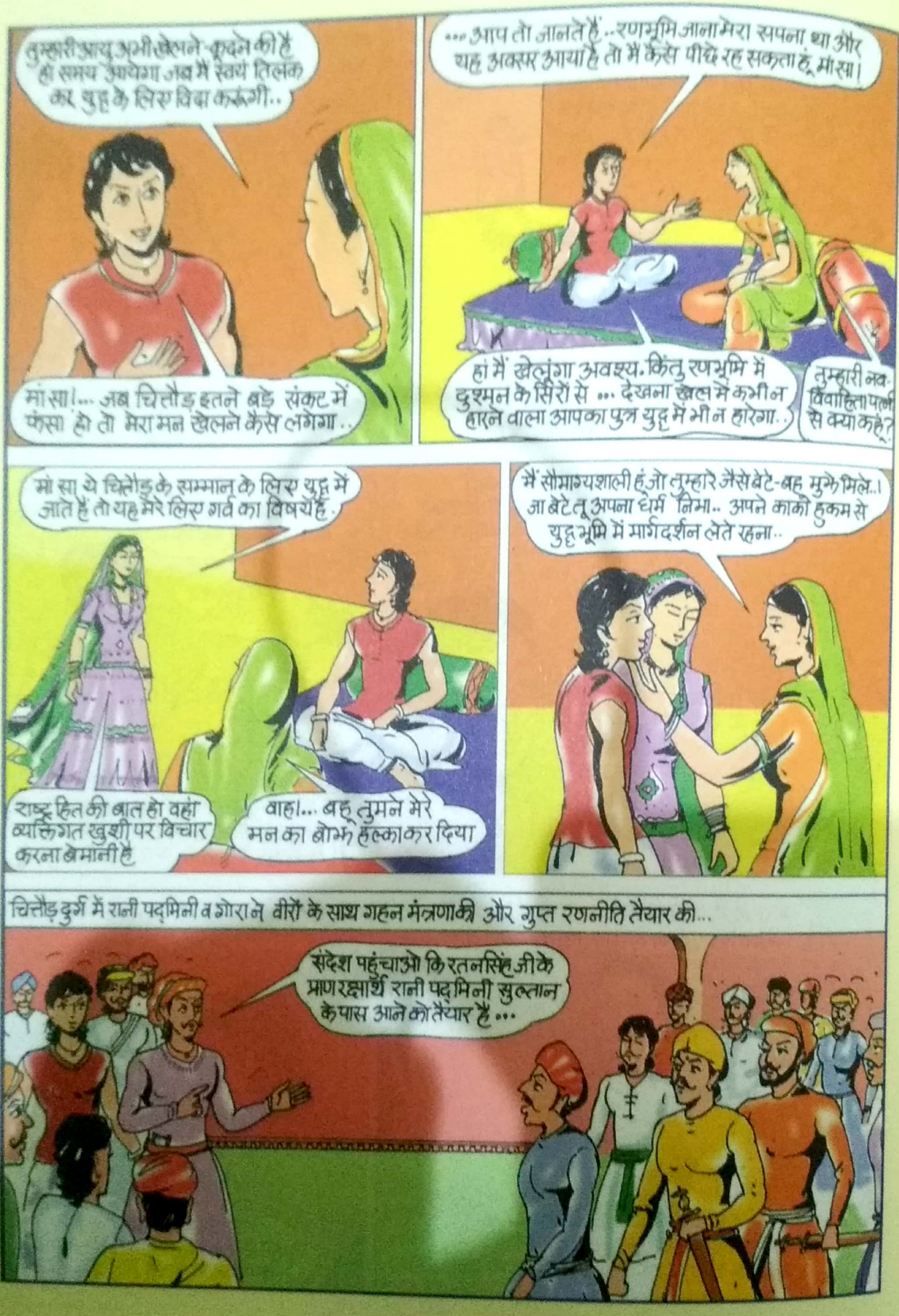
Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

संदेश खिलजी के पास पहुंचाया गया...

हुजूर! रानी पद्मिनी आपके पास आने को तैयार हैं...

वाह! यह खबर सुनने के लिए कितने बेचैन थे हम... पद्मिनी के दीदार को तरस रहे हैं हम

रानी अकेली नहीं, उनकी सात सौ सखियां भी साथ आयेंगी

सुभान अल्लाह!! पद्मिनी के साथ हुस्न का पूरा काफिला आ रहा है

बहुत खूब !!!...आने दो, शीघ्र आने दो

इधर चित्तौड़दुर्ग में गोरा व अन्य राजपूत रतन सिंह को दुश्मन के चंगुल से छुड़ाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने को उतावले हो रहे थे.

दुश्मन ने विश्वास घात ही नहीं किया, हमारे धर्म और क्षत्रित्व को कलंकित करने का षड़यंत्र रचा है

राजपूत तो जन्म ही धर्म व धरती की रक्षार्थ लेता है... और यह समय है इस जीवन की सार्थकता सिद्ध करने का.

वीरों दुश्मन को उसी की भाषा में मुंहतोड़ जवाब दे गें... स्मरण रहे मेवाड़ी गौरव व रतन सिंह जी के प्राणों की रक्षा हमारा एक मात्र लक्ष्य है...

Scanned by CamScanner

अब आज्ञा दीजिए... मैं आपको विश्वास दिलाता हूं रतन सिंह जी शीघ्र दुश्मन के चंगुल से मुक्त होकर आपके के सम्मुख होंगे...

गोरा जी मेवाड़ी पुत्रों की क्षमता पर संदेह कैसा..आइये विजय आपकी होगी

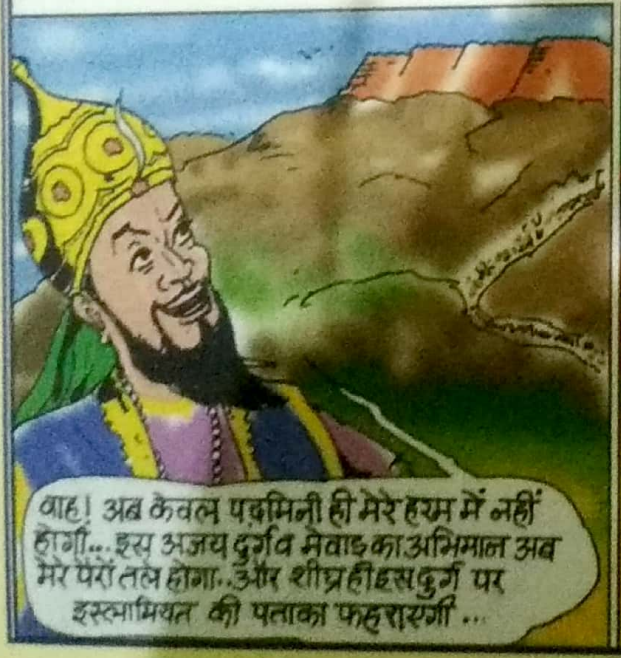
रानी ने वीरों को तिलक लगाकर विदा किया

रानी मां सा! मुझे आशीर्वाद दीजिए, मैं क्षत्रिय-धर्म निभाने में कमजोर न पड़ूं

बादल, तुम सिंह पुत्र हो!.. आज तुम्हारे शौर्य व पराक्रम से दुश्मन भी सहम जाएगा..जाओ मेरा ही नहीं एकलिंग जी व देवी मां का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है

योजनानुसार पालकियां दुर्ग से बाहर निकली... प्रत्येक पालकी के साथ पांच वीर... एक अंदर और चार उसे उठाये हुए





वाह! अब केवल पद्मिनी ही मेरे हरम में नहीं होगी... इस अजय दुर्ग व मेवाड़ का अभिमान अब मेरे पैरों तले होगा..और शीघ्र ही इस दुर्ग पर इस्लामियत की पताका फहराएगी...

मुबारक हो हुजूर! चित्तौड़ की रानी अपनी सात सौ सखियों के साथ पहुंचने वाली है..किंतु रानी हमेशा के लिए आपके पास आने से पूर्व बंदी रतन सिंह से अंतिम बार मिलना चाहती है।

दुश्मन की मलिका की इच्छा है तो मिलवा दो.. देर न करना, हम उसके दीदार को बेचैन हैं.. अब और इंतजार नहीं...

Scanned by CamScanner

बादल, जैसा हम चाह रहे थे वैसा ही हो रहा है... मैं रानी जी की पालकी के साथ जा रहा हूं... तुम यहीं प्रतीक्षा करो

रावल सा को कैद से मुक्त करा कर इधर भेजूंगा... उन्हें शीघ्र व सुरक्षित दुर्ग में प्रवेश कराना तुम्हारा काम है... ...यदि भेद खुल जाए, दुश्मन पर टूट पड़ना...

काकाश्री हुकुम!... यवन सैनिकों को हम रतन सिंह जी के नजदीक नहीं आने देंगे। हर कीमत पर मेवाड़ी गौरव की रक्षा होगी

क्या पता अब तुम्हें देख भी पाऊंगा या नहीं.

देवी मां तुम्हारी रक्षा करेगी.. चलता हूं

ठहरो केवल पद्मिनी की ही पालकी जाएगी.

रानी पद्मिनी अकेली कहीं नहीं जाती, ये दस विशेष सेविकाएं सदा उनके साथ रहती हैं..

Scanned by CamScanner

डोलियां बंदी स्थल पर पहुंचती हैं..

महारानी सा इधर पधारें..रावल जी इधर हैं...

रतन सिंह! सुल्तान की होने वाली बेगम पद्मिनी तुमसे मिलने आई है... अंतिम बार

नहीं! यह असंभव है

चले जाओ यहां से.. रानी हम आपका चेहरा भी नहीं देखना चाहते

शांत हो जाइए! हम आपको छुड़ाने आये हैं..देखिए इधर..

मैं लुहार हूं पहले आपको इन बेड़ियों से मुक्त करता हूं.. गोरा जी बाहर हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं..

गोरा जी ?

क्या सेविकाएं डोली से बाहर नहीं निकलेंगी? इनका दीदार तो हम भी कर सकते हैं!

हां! अब समय आगया बाहर निकलने का..हटादो पर्दा..

Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

नहीं!!! आज गोरा को कोई नहीं रोक पाएगा..

राजपूतों के सामने यवन सैनिक टिक नहीं पाए..

गोरा का रोद्र रूप देख दुश्मन सैनिक भागने लगे किंतु...

सभी मुस्लिम प्रहरी मारे गये ... अंदर लुहार रतन सिंह की बेड़ियां काट देता है.

हुकुम आपके दर्शन पाकर हम धन्य हो गये

गोरा जी, आप लोगों का उपकार हम कैसे चुका पायेंगे.

हमें आप पर गर्व है

हमने अपने धर्म का निर्वाह किया है

Scanned by CamScanner

अब आप शीघ्र दुर्ग की ओर कूच करें... अन्यथा हम सब की मनोरथ विफल हो जाएगा

गोरा रतन सिंह को लेकर दुर्ग की ओर निकल जाता है

हमें शीघ्र अपने साथियों के पास पहुंचना होगा... दुश्मन के सैनिकों को भनक लग गई होगी..

उधर अलाउद्दीन पद्मिनी का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था

अभी तक पद्मिनी क्यों नहीं आई?... हमारा मन आशंकित है... कहीं राजपूतों ने...

धीरज रखें हुजूर! पद्मिनी कुछ ही समय में आपके सम्मुख होगी

तब ही...

हुजूर! रतन सिंह के बंदी स्थल से कुछ घुड़सवार दुर्ग की ओर जाते दिखाई दे रहे हैं..

क्या?

रोको उन्हें!! हमारी आशंका सच निकली

वो रहे!... एक भी राजपूत जीवित नहीं लौटना चाहिए दुर्ग में..

गोरा रतन सिंह के साथ अपने साथियों के पास पहुंच जाते हैं

महाराज को बादल का प्रणाम।

वाह!... धन्य है मेवाड़ भूमि जहां ऐसे किशोर भी युद्ध भूमि में आ डटते हैं

और युद्ध कौशल दिखाने की घड़ी भी आ गई है..

Scanned by CamScanner

वीरों! इस दुश्मन टुकड़ी का खात्मा किये बिना रतन सिंह को दुर्ग में पहुंचाना संभव नहीं..

इसी घड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था मैं.. काकोसा हुकम

आओ पापियों काल तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा है..

गोरा-बादल की अगुवाई में राजपूत दुश्मन सेना पर टूट पड़े..

बादल तुम रावल सा को लेकर किले की ओर निकलो.. इन्हें मैं रोकता हूं

काकोसा! आपको छोड़ कर नहीं जाऊंगा.

Scanned by CamScanner

बादल के शौर्य प्रदर्शन से शत्रु दल में दहशत फैल गई वह जिधर भी बढ़ता... शवों के ढेर लगा देता...

वाह! इसे देख अर्जुन पुत्र अभिमन्यु का स्मरण हो रहा है... इस पराक्रमी बालक को युद्ध करते देखना कितना अद्भुत है.. धन्य है यह मेवाड़ भूमि...

बादल !!!

काकोसा, मेरी तलवार की प्यास अभी बुझी नहीं है... और आप मुझे ?

बादल एक योद्धा की तलवार की प्यास कभी बुझनी भी नहीं चाहिए!... किंतु आज तुमने अपनी तलवार की धार से शत्रु दल को जो पानी पिलाया है, उसे गर्व से याद किया जाएगा

दुश्मन से बचा कर रतन सिंह जी को दुर्ग में पहुंचाना बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है

बादल अब देर न करो! मैं दुश्मन दल को रोकता हूं..

रणभूमि से ऐसे जाना नहीं चाहता किंतु आपका आदेश

यशस्वी हो पुत्र!

शत्रु की नजर बादल पर थी

रोको उसे!! रतन सिंह उसके साथ है...

Scanned by CamScanner

बादल, किले की ओर बढ़ो !!! इन्हें हम रोक रहे हैं

काट डालो इन सिर फिरे राजपूतों को ... और पकड़ो रतन सिंह को

गोरा व अन्य राजपूत मुस्लिम सैनिकों के सम्मुख दीवार बन गये और बादल रतन सिंह को किले की ओर ले गया.

खिलजी दल से घिरा शूरवीर गोरा उनके लिए महाकाल बन उन्हें यमलोक पहुंचाता रहा

बादल की राह में शत्रु आ डटे किन्तु उन्हें चीरते हुए वह चित्तौड़ किले में रतन सिंह के साथ पहुंचने में सफल हुआ..

इधर गोरा व साथी मुस्लिमों को मौत के घाट पहुंचाते रहे किंतु शत्रु दल बढ़ता जा रहा था... राजपूत बड़ी संख्या में काम आये

Scanned by CamScanner

गोरा दुश्मनों की फसल काटता रहा... किंतु दुश्मन तो रक्तबीज की तरह बढ़ते ही आ रहे थे। एक एक राजपूत सैनिक युद्ध में काम आता गया और अंततः गोरा पर भी असंख्य यवन एक साथ टूट पड़े...

रावल रतन सिंह सा सुरक्षित दुर्ग में पहुंच गये होंगे... महारानी सा मैंने अपना वचन निभाया है..

...और मातृभूमि का सच्चा सपूत गोरा कर्तव्यपालन कर चिर निद्रा में समा गया..

"हे महादेव! अगला जन्म भी इसी पवित्र धरा मेवाड़भूमि में ही देना... प्रणाम.."

गोरा के बलिदान के समाचार घायल सैनिकों ने बादल और रतन सिंह जी तक पहुंचा दिए

रतन सिंह किले में पहुंच जाते हैं

महारानी सा को बादल का प्रणाम

बादल!! तुमने बड़ा उपकार किया है मुझ पर...

रावल सा!!... आपके दर्शन को हम सब तरस गये थे... कुशल तो हैं आप? ... गोरा जी आप के साथ नहीं दिख रहे ??

काकाश्री ने रावल सा को सुरक्षित यहां तक पहुंचाने के लिए अन्य वीरों के साथ अपने प्राण त्याग दिए...

Scanned by CamScanner

हे प्रभु चित्तौड़ को बड़े संकट से तो उबार लिया किंतु उसकी इतनी बड़ी कीमत...!!!

रानी जी, गोरा जी और इस वीर बालक ने आज वो किया है जो विशाल सेना नहीं कर पाती...

गोरा जी ने दुश्मन के घर घुसकर उसे मात दी है उनका बलिदान अद्भुत है.. और चित्तौड़ उनके यशस्वी कृत्य से कभी उऋण न होगा.

चित्तौड़ पर छाये संकट के बादल 'गोरा' व सैकड़ों वीरों के बलिदान, किशोर बादल के पराक्रम और तेजस्वी रानी पद्मिनी की सूझ-बूझ से टल अवश्य गये किंतु खतरा अभी समाप्त नहीं हुआ था... हां दुश्मन शांत बैठा था

रावल सा को तो हमारे वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियां देकर छुड़ा लिया है...

किंतु दुश्मन चोट खाये सांप जैसी स्थिति में है... वह अधिक समय तक शांत रहने वाला नहीं है...

दुश्मन लम्बे समय तक खतरनाक खामोशी के साथ सैन्य बल बढ़ाता गया... किले में धीरे धीरे खाद्य सामग्री समाप्ति के कगार पर जा पहुंची। रावल रतन सिंह व अन्य वीरों ने निर्णायक युद्ध का फैसला कर लिया...

वीरों अस्तित्व का परम धर्म चुने की घड़ी आ पहुंची है... तैयार हो जाओ

दुश्मन को लगता है हम अभावों के वशीभूत हो घुटने टेक देंगे।... चित्तौड़ के स्वाभिमान और भारतीय संस्कृति को हम अपने प्राण देकर बचायेंगे

हर हर महादेव

Scanned by CamScanner

रतन सिंह पद्मिनी को बताते हैं...

महारानी, धर्म व धरा के गौरव रक्षार्थ मेवाड़ी वीरों के लिए अंतिम युद्ध के अतिरिक्त कोई राह नहीं बची है ... कल केसरिया बाना पहन हमारे वीर दुश्मन पर टूट पड़ेंगे

स्वामी, सरोवर की विशाल जल-राशि को भीषण अग्नि सोख तो नहीं पाएगी ना? क्या अजेय चित्तौड़ दुर्ग गौरव सदैव के लिए मिट जाएगा???

रानी! प्रायः दुश्मन को मिटाकर हमने इसके सम्मान की रक्षा की है.. किंतु...

अब हम अपने प्राण देकर अपने धर्म व इसके गौरव को बनाये रखेंगे!.. और हर वीर यह सौभाग्य प्राप्त करने को व्याकुल है

इससे पावन निर्णय इस घड़ी में दूसरा नहीं हो सकता स्वामी!... आप अपना धर्म निभाएं पद्मिनी भी अपने धर्म रक्षा में पीछे नहीं रहने वाली...

रानी! आप पर कोई दबाव नहीं!.. आप अपना निर्णय लें

स्वामी धर्म को त्यागकर इस देह की रक्षा करना तो मृत्यु से भी बदतर स्थिति है... पद्मिनी को जीवन का मोह नहीं किंतु आत्मा की पवित्रता बनाए रखने का संकल्प अवश्य लिया है मैंने...

Scanned by CamScanner

हां, महादेव की लीला समझ से परे है !!! वसुधैव कुटुम्बकं व दया-धर्म आधारित संस्कृति अग्नि परीक्षा देती रहे और आततायियों का पापाचार बढ़ता रहे !

... और यहां आये विकराल संकट के पीछे नाम तो मेरा ही आएगा... कैसे मुक्त हो पाऊंगी मैं इस अपराध बोध से...

नाम तो आपका अवश्य आएगा किंतु साहसी स्वाभिमानी उज्ज्वल चरित्र धर्मनिष्ठ भारतीय नारी के रूप में...

हमारे चित्तौड़ को किसकी नजर लग गइ??

नजर नहीं लगी, ईश्वर की इच्छा व्यर्थ नहीं हो सकती... हमारे वीरोद्वारा दी गई और दी जानें वाली प्राणों की आहुतियां निष्फल नहीं होंगी ... इनकी धधकती लपटों से हमारा चित्तौड़ गढ़ और अधिक उज्ज्वल व कांतिवान होकर पूरे भारत के लिए प्रेरणापुंज बनकर दमकता रहेगा

उदास न हों रानी गोरा-बादल व आपके योगदान व समर्पण का सही मूल्यांकन आने वाला समय अवश्य करेगा

वि.स.1360(सन1303ईस्वी) को दुर्ग द्वार खुल गये, राजपूत केसरिया पहन दुश्मन पर टूट पड़े...सारे वीरों ने अद्भुत शौर्य प्रदर्शन करते हुए मृत्यु का वरण किया..वहीं रानी पद्मिनी और सैकड़ों राजपूत नारियों ने स्वयं को पवित्र अग्नि को अर्पित कर अपने धर्म की रक्षा की।

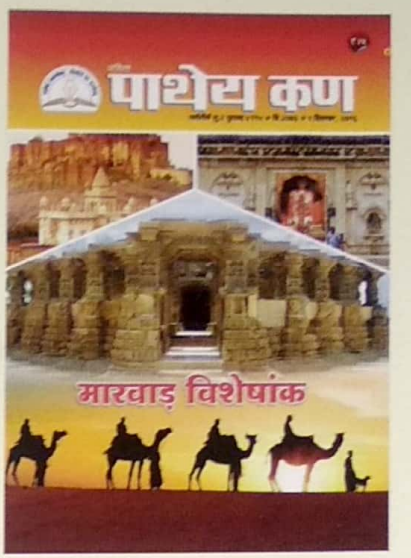
अलाउद्दीन खिलजी ने सेना के साथ दुर्ग में प्रवेश किया... किंतु वहां पद्मिनी की राख के अतिरिक्त कुछ न था...वह जीतकर भी हार गया। और चित्तौड़ दुर्ग बन गया हर देशभक्त के लिए पावन तीर्थ.

समाप्त

Scanned by CamScanner



भारत का
सर्वाधिक प्रसार
संख्या वाला पाक्षिक।



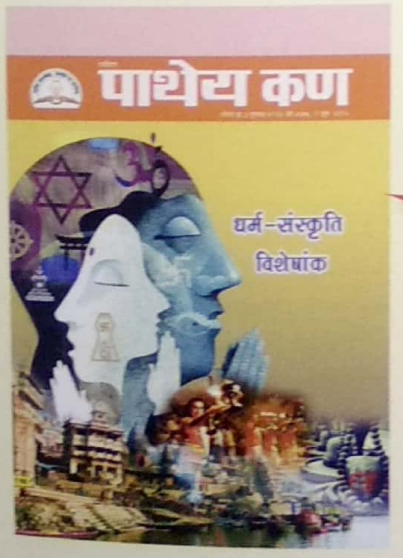
राजस्थान के २५ हजार
स्थानों तथा देश के
प्रमुख शहरों में प्रेषित।



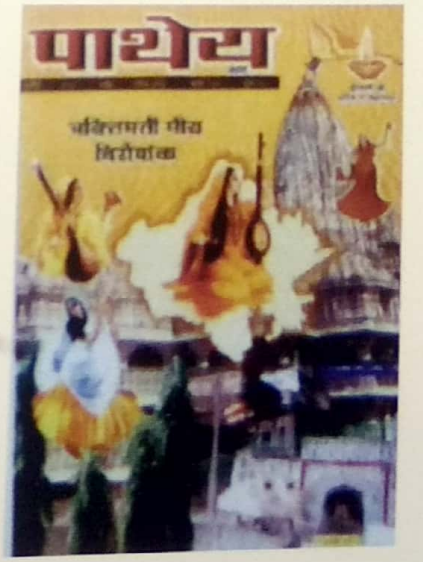
बहुरंगा आवरण
पृष्ठ
उच्च श्रेणी
गई।



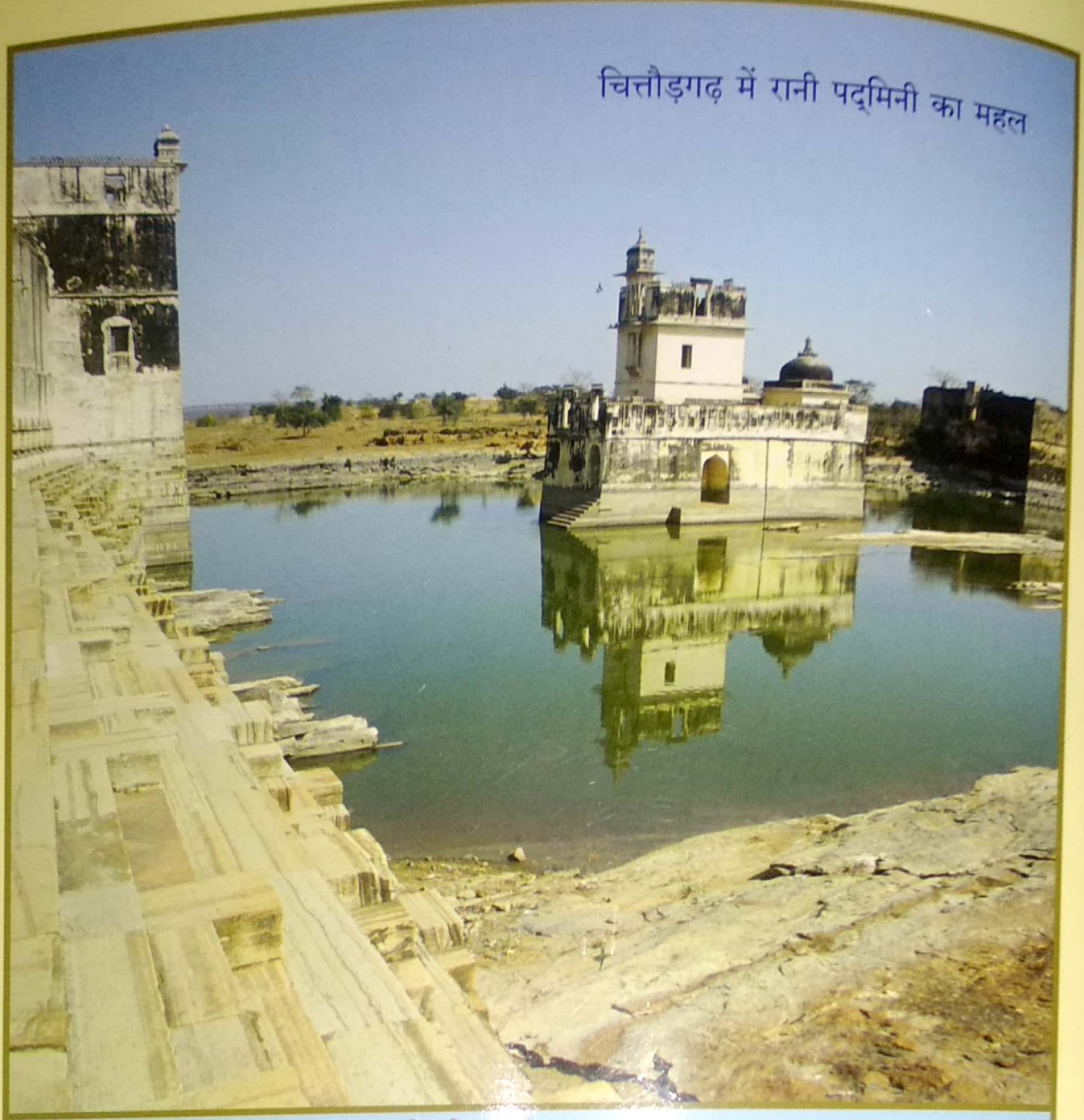
देश-विदेश में
१० लाख से भी
अधिक पाठक।



समसामयिक विषयों
पर लेख।



Scanned by CamScanner



चित्तौड़गढ़ में रानी पद्मिनी का महल



ब्रजराज राजावत

जन्म : 1963 खरेड़ा, तह– टोडारायसिंह, जिला–टोंक, राजस्थान
पिता : श्री शम्भू सिंह जी राजावत अल्पज्ञ
माता : श्रीमती रतन कंवर
शिक्षा : पंचवर्षीय कला डिप्लोमा (पेन्टिंग) (योग्यता सूची में प्रथम)
राजस्थान कॉलेज ऑफ आर्ट, जयपुर
एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

प्रकाशित चित्रकथाएं :
बलिदान (बाल उपन्यास)
शकुन्तला (पौराणिक)
हाडी रानी का बलिदान (ऐतिहा
सैणी बीझा (प्रेमकथा)
मूमल महेन्द्रा (प्रेमकथा)
गोरा बादल (ऐतिहासिक)
अमृता देवी का बलिदान (पर्यावरण)
प्रतिशोध व प्रीत (ऐतिहासिक)
दुर्गादास राठौड़ (ऐतिहासिक)
क्षत्राणी की सैनानी (ऐतिहासिक)
भक्त शिरोमणि मीरा (ऐतिहासिक)
अभिशप्त भानगढ़ (ऐतिहासिक)
वीर सावरकर (स्वतंत्रता क्रांतिवीर)
राजा हरदौल (ऐतिहासिक)
रहस्यमय कमल (लोक कथा)
जीत किसकी? (लोक कथा)
शर्त (लोक कथा)
सुक्खा ठग (लोक कथा)
गोविन्द गुरू भील आंदोलन (स्वतंत्रता बलिदान)
समाचार पत्र व पत्रिकाओं में चित्रकथाएं प्रकाशित

कल चित्र प्रदर्शनी :
जयपुर एवं बैंगलोर में

पुरस्कार : सम्मान
दूरदर्शन राष्ट्रीय पुरस्कार 2009
दूरदर्शन मेरिट पुरस्कार 2009 एवं 2010
अखिल भारतीय 'पोस्टर प्रतियोगिता' पुरस्कार
स्कॉलरशिप पुरस्कार राज. ललित कला अका.
राजस्थान कला केन्द्र द्वारा पुरस्कृत
राष्ट्रीय केयांस कला मेला, टोंक
महाराव शेखा स्मृति संस्थान, जोधपुर

वर्तमान में :
ऐतिहासिक व लोक कथाओं को चित्रकथाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने में कार्यरत।
कहानी व कविता लेखन
जयपुर दूरदर्शन केन्द्र जयपुर में
वरिष्ठ ग्राफिक कलाकार

पता :
91, ए.के. गोपालन नगर, खातीपुरा,
जयपुर–302012 (राज.)मो.नं. 9414558464
brajrajrajawatjpr@gmail.com

मुद्रक : कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

Scanned by CamScanner